## गुरुवाणी

हमारे और आपके बीच में, पृथ्वी और आकाश के बीच में जो खाली है, यह "खाली" उसी का स्रोत है। इसी को कहा गया है भगवती की, भवानी की, सप्तचंडिका में।

*–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी*

# अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरौः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-16/2022-24

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़दानी।।

वर्ष-२६, अंक १६, वाराणसी | रविवार ३० अगस्त २०२६ | सहयोग राशि ४.२५

# अपनी पूजा भगवती की पूजा है!

## अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

*धर्मबन्धुओं!*

आप लोग जो भगवती में, गुरुजनों में श्रद्धा रखने वाले हैं और शक्ति के उपासक हैं, उन्हें इस पर्व पर बड़े ही उत्तम, पवित्र-पवित्र विचार करना चाहिए। हर एक विवाहित उस शक्ति का सहयोग लेने लगता है। उससे बहुत कुछ इच्छा करता है। इस पवित्र पर्व पर उन विवाहित व्यक्तियों को अपनी शक्ति के पत्नी के या कन्या इत्यादि के प्रति देवी स्वरूप देखेंगे। उनसे भी अपने जीवन का जिसे शान्ति कहिये उनसे कामना कीजिये। कलह, ईर्ष्या, द्वेष अपने परिवार कुटुम्ब से दूर रखें। पर्व के पवित्र गुणों के संग्रह में लगे हैं। पर्व पर एक ही गुरु से विभिन्न देवताओं, शक्तियों के मंत्र पाये व्यक्ति एकत्रित होते हैं। गुरु भी उन्हें इसी आशय से मंत्रों को वितरित करते हैं, उनके योग्यता, गुण, कर्मों के अनुसार। आप गुरु मंत्रों को यथाशक्ति गुनगुनायें। हृदय में साहस और पौरुष उत्पन्न होगा। आज पवित्र पर्व का प्रथम दिन है। मंत्र जप का जो संकल्प किये हों, करेंगे। जितना दिन जीवन का गुजार चुके हों, उतने वर्ष के हिसाब से प्रतिवर्ष उम्र के एक हजार जप कम से कम करें।

जप के साथ ध्यान करते हैं। स्वर से जो आकृति सूक्ष्म में बनता है, कल्पना मन द्वारा समझने का प्रयत्न करें। प्रणव करते हैं, मन्त्रोच्चारण करते हैं, ध्यान करते हैं। शब्द से आकृति बनती है, अक्षर बनते हैं, बोध कराते हैं। अनुभव जन्य बाते हैं आप अनुभव करेंगे। अनुभव जन्य समझेंगे। जीवन का इससे परम कल्याण होता है। इच्छायें तृप्त हो जाती हैं। कामनायें जीवन में कम हो जाती है। जीवन शान्त, एकाग्र होता है। ऐसी अनुभूति बनेगी तो शान्त चित्त बैठने पर समाधि लग जायेगी। उसमें आत्मा जिसे बड़े-बड़े योगी खोजते हैं, का साक्षात्कार होगा। हमारी इन्द्रियाँ बोध कराती हैं। इससे भिन्न-भिन्न बातें, संसार का घटना चक्र समझ में आयेगा। मनुष्य को ही आता है। सांसारिक प्रपंच से चित्त अलग होगा, सो अनुभव करेंगे। हमारे व्यक्ति हैं जो तप, व्रत, ब्रह्मचर्य, कम भाषण, प्रपंच त्याग कर रहे हैं। इस तरह के तप का बड़ा फल होता है। इस गुण से मनुष्य आत्मा तक पहुँचता हैं। इष्ट मंत्र, इष्ट देवी का प्रयत्न कर ध्यान करें। ध्यान में शान्ति है। जैसी अन्त: प्रेरणा मिले वैसी क्रिया करें। बनावटी न हो, दम्भ न हो इस पवित्र पर्व पर जो कहा है उसे व्यवहार में लावेंगे। चैत्र नवरात्र के पुनीत पवित्र पर्व के दूसरे दिन श्री मुख से अमृत वाणी निनादित हुई-

पवित्र पर्व पर आप लोगों के संग में रहकर के पवित्र काशी नगरी में, गंगा के तट पर एक बड़ी नई अनुभूति, अनुभव हो रहा है। उन अनुभूतियों को वाणी के माध्यम से पहुँचा रहा हूँ। आशा करता हूँ, निष्ठा हैं जिनको, दीक्षित हैं, गुरु के सन्निकट रहने का मौका मिला हो, वे विचार करेंगे, सोचेंगे। जीवन का पवित्र कर्त्तव्य समझ कर उतारेंगे, व्यवहार में लावेंगे। मेरा भी अनुभव है जो कह रहा हूँ। अपनी पूजा, ध्यान, धारण करते हैं। जब आसन लगाकर जाप इत्यादि में बैठते हैं तो आपका एक हाथ भूमिगत होना चाहिए। क्योंकि शक्ति पृथ्वी से मिलेगी। दाहिने हाथ से जप करते हैं उस समय बायें हाथ से पृथ्वी का स्पर्श करें। सोकर उठें तो पृथ्वी को प्रणाम करे। पृथ्वी माता हैं। इनमें शक्ति है, पावर है। मल मूत्र थूक इत्यादि उदय से अस्त तक इन्हीं पर करते हैं। वह स्पर्श मुद्रा क्षमा गत है। जिस शक्ति की आवश्यकता है अपने में इनसे प्रविष्ट करेगी। आसन पर बैठे तो अंगों को मुद्रित किये रहे। मुद्रा से अपने में आकर्षण आता है। सौम्यता आती है। देखने वाले को कई चीजें परिलक्षित होती है। कई देवताओं के अंशों से मिला अंग-प्रत्यंग हो जाता है। सुदृष्टि से देखने वाले को परिलक्षित होता है। देखने से आनन्द की अनुभूति सुदृष्टि से होगी। अपने को भाव में, मुद्रा में सन्निद्ध रहना चाहिए। यह आनन्द धन से, उच्च पद प्राप्त करने में अथवा सुन्दरियों के साथ रहने से नहीं मिलेगा। चित्त को विश्राम देकर इन्द्रियों को अनुशासित करके ध्यान करेंगे। यह तो ध्यान, धारणा की बातें रहीं।

भगवती को चारों दिशाओं में प्रणाम करें। दिशा स्वरूप भी तो वही हैं। दिशा ही तो रखवार है। वही तो देखता है, कौन क्या करता है। जहाँ भी विश्व में जाइये मिलेगा। देवी के गणों के रूप में दिशा हैं योग वशिष्ठ में भी जहाँ महाकाली का वर्णन आया है, यह उद्धृत है। नवरात्र कर रहे हैं। इसका मतलब सेवा है। देवी के दिव्य गुणों का, दिव्य यंत्रों का सेवा कर रहे हैं। देवी यंत्र, गुण अपने में हैं। बाह्य रूप में भी तरह-तरह के मंत्रों, उपासना, यंत्रों द्वारा पूजा करके देवता को, अपने इष्ट को, जो अपने में है, द्रवित कर रहे हैं। पूजा तो अपना ही होता है। अपनी पूजा करते हैं। एक भक्त ने एक दिन कहा कि आपकी पूजा करने आये हैं। आपका छोड़ कर दूसरे की पूजा नहीं करता हूँ। आपकी पूजा होनी चाहिये। ये बीच में कौन सी वस्तु आ गई। लेकिन वह नहीं समझ रहा था। उत्पत्ति प्रलय हमारा, उसका, सभी का एक पराशिक्त है जो करती है। मैं नहीं चाहता कि मेरी पूजा, भगवती की पूजा आप करें। अपना पूजा ही भगवती की पूजा है। उनके जो गुण हैं, स्मृतियाँ हैं, वह हमारा होगा। वह शनैः शनैः योग्यतानुसार देते रहेंगी। इस जन्म में और जो शेष रह गया उसे बाकी जन्मों में भी देंगी। हम भूने बीज तो नहीं बनना चाहते। निर्वाण तो नहीं ले रहे हैं। हम फिर आयेंगे। ऐसा न समझे कि आये और चले गये। तुम्हारा इष्ट बराबर तुम्हार साथ रहेगा। तुम्हें प्यार करेगा, गाली देगा, साथ में खेलेगा। जीवन का यही सुख है। निरर्थक नहीं घूमें। व्यर्थ जीवन नहीं व्यतीत करें। समय को रचनात्मक कार्यों में लगावें। सेवा उन भारतीय मनुष्यों का नहीं, उस देवी का, शक्ति का जो क्षुधा रूप में, अन्न रूप में, शक्ति रूप में, विभिन्न रूपों में हमें सामर्थ्य, शक्ति दान किये हैं। ये विमुख हो जायें तो हमारा शरीर दु:खी हो जाता है, क्षोभ उत्पन्न होता है। उनकी दया है कि स्वस्थ हैं। कृपा है उनकी सामर्थ्य दिये हैं। रोगियों की तरह क्यों रहें? बाध्य होकर लोग नारकीय जीवन व्यतीत करते हैं। जिनका मन कलुषित है वे कभी ध्यान उसका किये नहीं। दूषित, कलुषित हृदय, सुन्दरियों के पीछे जीवन नष्ट करते हैं। क्षण मात्र के लिये भी ध्यान हो तो बहुत अच्छा है। क्षणमात्र का ध्यान कोटि-कोटि जन्मों के पापों का नाश करता है।

अपराध वही है जो करके स्मरण करते हो। स्मरण हो वही अपराध है, यह समझ लो। जान बूझ कर किसी बात को करे वही अपराध है। जो हो गया वह क्षमा हो जाता है। उस तरह के वातावरण में रहोगे तो अपरिचित से हो जाओगे। अपरिचित जैसा मारा-मारा फिरोगे। स्वयं भी अपने ही

शेष पृष्ठ 3पर

# सम्पादकीय

## प्रकृति की चेतावनी

विगत 26 अगस्त 2026 को नेपाल में भीषण जल प्रलय का आतंक देखने को मिला। टेलीवीजन पर ऊंची उठती लहरें, हिम खंडों एवं बड़े-बड़े चट्टानों से युक्त जल हाहाकार मचाते हुए अचानक जब आबादी की तरफ बढ़ा, तो मंजर बड़ा भयावह था। 200 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से तीस फीट ऊंचा जल का प्रवाह बड़े-बड़े मकानों,कई मंजिला इमारतों, स्कूलों एवं परियोजनाओं को धूलधुसरित करता हुआ, जब आगे बढ़ा तो मानों चित्कार के अलावा कोई विकल्प शेष नहीं था। तिब्बत सीमा से चला यह ग्लेशियर नेपाल के रसुवा, मुवाकोट, धाडिंग, गोरखा चितवन आदि जिलों को पूरी तरह तबाह कर चुका था, जहाँ घंटा, आध-घंटा पहले जीवन सामान्य था। वहां अब मात्र तबाही का ही मंजर व्याप्त था। जिससे भारतवर्ष के नेपाल के सटे यूपी एवं बिहार की नदियों में भी अप्रत्याशित जल की सम्भावना को देखते हुए प्रशासन को एलर्ट मोड पर रख दिया गया था, क्योंकि नेपाल की नारायणी नदी ही बिहार में आकर गंडक नदी बन जाती है। वैज्ञानिकों ने बताया कि 4.4 रेक्टर तीव्रता के भूकम्प के कारण ग्लेशियर टूटा जो बिनाश बन कर रास्ते में आने वाली आबादी को तहस-नहस करते हुए आगे बढ़ गया। इसके पूर्व 2013 में केदारनाथ में आयी जल की विभीषिका को हम भारतवासी विस्मृत नहीं कर पाएंगे। जिसमें अपार जनहानि के हम साक्षी हैं।

दिनोदिन ऐसी प्राकृतिक कोप की भयंकरता क्यों घटित हो रही है ? जिसमें प्रकृति अपना रोष प्रकट कर रही है। यद्यपि हम अवगत है प्रकृति की शक्ति अपरिमित एवं अपार है। जिसमें सदैव मनुष्य के विकास का प्रयास अथवा प्रकृति के विपरीत चलने की कोशिश बौनी हो जाती है। इसका एक मात्र कारण हमारे द्वारा प्रकृति की अनदेखी करनी ही है। वैसे तो विश्वभर में ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरण सुरक्षा, हरितक्रान्ति आदि का सिद्धान्त भले ही जोर-शोर से समारोह कर इसकी विवेचना की जाती हो, फिर भी धरातल पर इसे कोई भी राष्ट्र अमल में नहीं लाता। जिसका परिणाम यह होता है, कि हिमालय तक के ऊंचे-ऊंचे बर्फीले चोटियों पर इसका कुप्रभाव पड़ रहा है। जिसका खामियाजा मानवता को भुगतना ही पड़ेगा। अंधाधुंध बनों की कटाई, पहाड़ों के चट्टानों का कटाव, खुदाई, आदि से पृथ्वी का संतुलन असामान्य होता जा रहा है। विकास के नाम पर परमाणविक, रासायनिक हथियारों का परीक्षण, कारखानों से निकलते प्रदूषित धुंआ, नदियों में बहाया जाने वाला खतरनाक रसायन आदि मानव के समस्त कारनामों के कारण प्राकृति रौद्र रूप धारण कर लेती है। जिससे मानव अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह उठ खड़ा हुआ है।

हमारे सनातन समाज में पूर्व से ही ऋषि, मुनियों के द्वारा पहाड़ों, नदियों, वृक्षों, सागर आदि को आदर-सूचक भाव से प्रकट किया गया है। हमारी यही श्रद्धा हजारों वर्षों से इन प्राकृतिक सम्पदाओं को समादर देते हुए अपनी रक्षा दायित्व इन्हें सौंपा था। जिससे न केवल हरे पेड़ काटने को पाप कहा गया है, बल्कि नदियों और सागर को भी प्रणाम कर उनमें स्नान करने का विधान बनाया गया है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण रामायण में निहित है। भारत के उत्तरांचल को देवभूमि की संज्ञा दी गई है। दुर्भाग्य है कि अधुनातन युग के कुछ युवाजन अपने को अतिविकसित मानते हुए इन स्थानों पर श्रद्धा के स्थान पर मौज-मस्ती का स्थान बना लिए थे। जिससे न केवल हमारे पवित्र तीर्थ-स्थल बद्रीकाश्रम, केदारनाथ, गंगोत्री, जमुनोत्री को विशुद्ध तीर्थ स्थल के स्थान पर पर्यटन स्थान बना दिया गया जिससे ऐसी त्रासदियों का घटित होना अपरिहार्य है।

**C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान्** के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
**सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा**
**ग्राफिक्स : नित्यानन्द उपाध्याय**
☎ **9452713030, 9794487878**
**e-mail–Neenad@aghorpeeth.org**
**www.aghorpeeth.org**

# उपासक एवं उपासना

गुरु ज्ञान के गर्भ से ही इन्द्रियाँ अनुकूल होती हैं, साधना सुगम हो सिद्ध होती है। पर यह गर्भ धारण भी उसकी कृपा से ही सम्भव होती है।

हमारे प्रेरणा देने से ही देवी का अनुष्ठान किये होंगे। यह जो नौ रोज का दु:ख कष्ट है, उसके लिये क्षमा करेंगे। नौ मास मनुष्य गर्भ में भी दु:ख भोगता है। यह भी नौ दिन है। फिर जन्म ही हो जायेगा। तब सुख ही सुख रहता है। जब तक गर्भ का दु:ख गुजर रहा है, उसके लिये आप लोग ज्यादा चिन्तनीय नहीं होइयेगा।

नानक कहते हैं **''नानक नन्हें रहिये जस धासन में दूब, सब धासन जल जईहन दूब खूब की खूब।''** बरसाती घास बहुत उत्पन्न होते हैं, सब जल जाते हैं, उसी जमीन में दूब उगा रहता है। ज्यादा उगता है न मिटता है, सदैव अपने जीवन में आस्था हर एक व्यक्ति को ऐसा ही रखना चाहिये। कितने ही महापुरुषों को जीवन में कठिन दु:ख झेलना पड़ता है। जैसे सिख गुरु परम्परा के गुरुओं को कतल कर दिया गया, उनके बच्चे को दीवार में चुन दिया गया। पर वह (सिख) इतने पनपे कि कहा जाता है कि ऐसा कोई देश नहीं जहाँ सिख नहीं दिखते। सुकरात के साथ भी ऐसा हुआ, उनको विष दिया गया। ईसा को शूली दिया गया। दयानन्द को समाप्त कर दिया गया था। इस तरह जो कठिनाई, दु:ख, परेशानी है, वह हमें एक नया मोड़ देती है। हमारे में परिपक्वता लाती है।

हर क्षेत्र में कठिनाई, परेशानी है। उससे धैर्यवान रहना चाहिये। घबराना नहीं चाहिए। रामायण में देखे होंगे श्री राघवेन्द्र कितना रो रहे थे, बिलख रहे थे, जिस दिन उनकी सीता का हरण हो गया था। बन्धु-बान्धव छोड़कर गये थे, प्रजा छोड़ दिये थे, वे जंगल में भटक रहे थे। आँखों से आँसू गिर रहा था। उनके बन्धु लक्ष्मण ने समझाया। विपत्ति सम्पत्ति रात दिन की तरह है। आता है चला जाता है।

जो धैर्यवान हैं, वही महापुरुष हैं। अपने सामने जो कुछ भी कठिनाई हो, परेशानी हो, उसके लिये धैर्य रखना चाहिये। प्रयत्न करना चाहिये। धीरे-धीरे वह समाप्त हो जाता है। नये सिरे से उसकी जिन्दगी होती है। नये सिरे से उसका जीवन आता है। हर एक महापुरुष के जीवन में यह घटता है।

हमारी उपासना, साधना उसी तरह प्रेरित करती है जिस तरह न्याय है, उचित है, सर्वव्याप्य है, सब जन हिताय है, सब प्राणियों के लिये हितकर है। इसे अपना व्यक्तित्व अपना श्रेय समझाना चाहिये। इसे ईश्वरीय प्रेरणा समझना चाहिये। हमारी उपासना, पूजन धैर्यवान बनने के लिये प्रेरित करती है। ईश्वर के साथ जो लगाव वाला मार्ग हैं, उसको प्रशस्त करना चाहिये। सहस्त्रों वर्ष तक, सहस्त्रों जन्म लेते हुए, हम भटकते-भटकते चलते रहते हैं। ग्लोब का नक्शा देखिये, उस गोलम्बर पर जहाँ से चलिये वहाँ से उसकी दूरी एक ही रहता है। घूमते जाइये, सोचिये खत्म हो जायेगा, पर कहीं भी खत्म नहीं होगा। अपने जीवन जीवन चक्र में सहस्त्रों वर्ष से हम चलते आ रहे हैं। पशु-पक्षी नाना प्रकार की योनियों में हम जन्म लेते रहते हैं। हम जो अभी हैं थोड़ी देर बाद नहीं रहते, जो आज हैं कल नहीं रहते। आप जब सूक्ष्म दृष्टि से देखियेगा तो आपको इसी तरह का विचार, अपना मन, आपके शरीर का घटना बढ़ना स्वास्थ्य पर उसकी प्रक्रिया होना, जो कल का निश्चय था, वह आज नहीं, यह सब बातें प्रस्फुटित होती रहती हैं। घटती रहती है, ठीक है। घटने दें। इस तरह से जो हम एक विचित्र सा बन जायेंगे। उससे शंका बनी रहेगी, दुर्घटना होती रहेगी। हम अपने जीवन में इस चीज को नियमित कर लें। क्योंकि वह भगवती, वह देवता जो है, उसके जितना हम सान्निध्य में चले जायेंगे। यदि हम उसके अनुकूल होने के लिये इच्छुक हैं तो फिर हममें जो घट रहा है,

**शेष पृष्ठ चार पर**

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

अपरिचित हो जाओगे। घर, परिवार, कुटुम्बी, मित्र सभी अपरिचित हो जायेंगे। इस तरह का जीवन अपने परिवार में भी लोग व्यतीत करते हैं। उनके अपने ही उनके लिये अपरिचित हो जाते हैं। सदैव ऐसी परिस्थिति ऐसे लोगों को हो जाती है। अपने कुटुम्बी भूल जाते हैं। सब पर घटता है। इसका जानकारी रखना चाहिए। इसका त्याग करना चाहिये। आगे बढ़ना है, काम करना है। यह तो लम्बे जीवन के लिये बातें हैं। सोचेंगे तो देखेंगे घटित होता है घर-घर में। ऐसा विश्वास हीनता से होता है। बात से देवता प्रसन्न होते हैं। बात यानी विश्वास। बात ही से लात खाता है, बात ही से पान खाता है, बात ही से देवी देवता को प्रसन्न करता है। माँ शक्ति को विश्वास दिलाते हैं। मंत्र क्या है? विश्वास है। अपनी बातें कहते हैं। उसका दर्शन माँगते हैं। राम कृष्ण परमहंस के बारे में सुने होंगे। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। समझ रहे थे कि ब्राह्मण का, कुल का भेद रहेगा तो देवी कैसे दर्शन देंगी। तुलसी दास जी ने भी कहा है कि जात-

# अपनी पूजा भगवती की पूजा है!

पात, कुल, धन, मर्यादा सब तज कर राम चरन लव लाई। इसका अभिमान रहेगा तो वह नहीं मिलेगा। शराब पीते हो तो संकोच क्यों करते हो। संकोच मत करो। इससे मत डरो कि दुनियाँ क्या कहेगी। सफलता मिलेगी तो दुनिया पूजेगी। देवी के कृपा से अपवित्र कर्म भी पवित्र हो जायेगी। उसकी कृपा नहीं रहने से पवित्र कर्म भी अपवित्र हो जायेंगे। परवाह मत करो। सफलता मिलेगी। परमहंस ने पत्तल खिलाकर उन जूठ पत्तलों से चावल चुनकर देवी को आवाहन कर वायुमण्डल द्वारा अपनी प्रार्थना देवी तक पहुँचाते थे कि माँ देखो मुझ में ब्राह्मण होने का, जाति, का कुल का, मर्यादा का अहम् नहीं है। मैं इन जूठे चावल को खा रहा हूँ। मैं ब्राह्मण नहीं हूँ। तब माँ का दर्शन प्राप्त किये थे।

**चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़।**
**तुलसी दास चन्दन घिसे तिलक देत रघुबीर।।**

तुलसी भी वाम मार्ग के उपासना से ही राम को प्राप्त किये थे। सुने होंगे कि पाखाना से आते थे तो बचा पानी एक पेड़ के जड़ में डालते थे। वाम मार्ग की क्रिया करते थे। इससे उन्हें भूत मिला। भूत यानि कोई आत्मा। क्रिया से उसे नहीं प्राप्त करते तो जैसे औरों को भूत लगता है उन्हें भी लगता है। वे भी ओझाई में ही रह जाते। क्रिया किये। उस आत्मा के द्वारा हनुमान जी से मिले। हनुमान जी ने मार्ग बताया राम के मिलने का। चित्रकूट में चन्दन लगाते समय सन्तों के भीड़ में राम भी आये। लेकिन तुलसी नहीं पहचान सके। हनुमान ने संकेत किया। फिर भी तुलसी नहीं पहचान पाये। क्योंकि चन्दन लगाने का चार पैसा लेते थे, अपने खर्च के लिये और यही बाधक हुआ चार पैसा राम को पहचानने में। हनुमान ने दूसरे दिन कहा यह चार पैसा भी छोड़ दो। एक ही का आश्रित रहना चाहिए। जो उसका आश्रित है उसे मनुष्य का आशा नहीं करना चाहिए। रघुनाथ ने कहा "मोर दास कहाई करे नर आस को, तो कांहि लगि उसे मोर विश्वास।" एक तरफ दास बनेंगे, दूसरे तरफ दूसरे का आस रखेंगे।

यही कहूँगा, अभिमान छोड़कर उस परम पवित्र आद्या का ध्यान करें। अपराध हटायें। लोलुपता का भी त्याग करें। जो कहा हूँ उसे खूब मनन कीजिये, अपने मित्रों से भी, जाति-पाति, धन धर्म बड़ाई और तुलसीदास के पैसे का भी, किससे उन्हें हनुमान मिलें। इष्ट परमावश्यक है। उद्धार करेंगे। उनका बराबर चिन्तन करेंगे। यह न सोचें कि गृहस्थ हैं तो कैसे माँ तक पहुँचेंगे। राम कृष्ण को देखें। उनकी शक्ति साथ थीं। विष्णु के उपासकों में यह रोक हैं कि बीबी, घर, परिवार, धन, धाम छोड़ दें। आप अपनी पत्नी के साथ सद्व्यवहार करें। एक नारी ब्रह्मचारी। अपने पर्व त्योहार पर संयम रखें। भोगेच्छा कम रखें। उसमें लिप्त न हो जायें। लिप्त होंगे तो स्वास्थ्य गिरेगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जायेंगे। इसलिये अपने बुद्धि से निर्णय करें। रोज की बोल चाल में कहा हूँ। आप सोचें अपने को कितना निष्ठावान, विश्वसनीय और पौरुष वाला होना है। आज के लिये विदा लेता हूँ।

# पड़लन राम कुकुर के पाले, खींच खांच के कइलन खाले

यह एक पौराणिक कथा है। एक समय की बात है एक कुत्ता एक नगर में रास्ते पर सोया था। एक ब्राह्मण उसी रास्ते से जा रहा था। उसे भय ने धर दबोचा। भय की शंका में उसने कुत्ता को एक डंडा लगा दिया। कुत्ता अपना कोई कसूर न देखकर महात्मा श्रीराम के दरबार में उपस्थित हुआ और दरखास्त किया। उसकी अर्जी की सुनवाई के लिए राम जी उसे बुलवाये और सभी बातें उसकी सुनी। ब्राह्मणों की बहुत इज्जत उस समय थी। राम जी उस ब्राह्मण को दण्ड देने से बड़े घबड़ा रहे थे। राम जी सोचने लगे कि क्या किया जाय। गलती तो उसने की है दण्ड मिलना चाहिए। उन्होंने कुत्ते से ही पूछा कि बताओ क्या दण्ड दिया जाय। कुत्ते ने कहा कि आप न्यायालय के आसन पर से हट जाय। राम जी आसन से हट गये और कुत्ते को बैठने के लिए कहे। बैठते ही उसने फैसला सुनाया, पण्डित जी को इन ब्राह्मण देवता को किसी शिव मंदिर का महन्त बना दिया जाय। फैसला कर जब वह हटा तो लक्ष्मण, भरत, राम इत्यादि सभी ने उससे पूछा कि अपकार के बदले तुमने उपकार किया भाई। यह तो कोई सजा नहीं हुई। कुत्ते ने अपनी पूर्व कथा सुनाई। मैं बड़ा पवित्र ब्राह्मण था। नित्य प्रति हवन करता था। मैं शिव का उपासक था। शिव मंत्र से हवन करता था। ठंडे दिनों में मेरे नाखूनों में घी लग जाता था। हवन करने ऐसा हो जाता था। जब मैं घर आता तो मेरे पत्नी गरम दाल या दूध वगैरह दे दिया करती थी। हाथ डालने पर सभी खाद्य पदार्थ हवन के घी से मिश्रित हो जाते थे। यह शिव निर्माण खाने का फल हुआ कि मैंने कुत्ते की योनि में जन्म लिया। पण्डित जी शिव मन्दिर का महन्त होंगे तो इन्हें हमेशा शिव निर्माल खाने का अवसर प्राप्त होगा, हमारी योनि में यह हमेशा जन्म लेंगे। शिव निर्माल, विष्णु अंश और काचा परा जो खाये, वह निर्धन कि कोढ़ी। शंख बाजे बलाये भागे, दुश्मन के मुँह करखा लागे।

# गुरु एक स्टेशन के समान है...!

**पृष्ठ चार का शेष**

जब तक चित्त में चांचल्य है इच्छाएँ हैं सोने का महल भी दुःखकर ही होगा। दुःख क्या है? मनोनुकूल इच्छा की पूर्ति न होना ही, इनसे बचने के लिए गुरु की शरण की आवश्यकता है। गुरु एक स्टेशन के समान है आप वहाँ से हर स्थान का टिकट ले सकते हैं उपकार से नर्क का। और उपकार से स्वर्ग का उपकार ही मानव जीवन की सार्थकता हैं। उपकार अपना हो या पराया। मन क्रम से उपकार में लगे व्यक्ति ही संत कहे जाते हैं। ये कोई जंगल, पहाड़, गुफाओं में नहीं रहते मास्टर।

पवित्र विचार ही उनका विहार है जिसमें संत विचरण करते हैं। छूत या अछूत जिनमें यह विचार पाया जाता है वही हमारा है और हमें उन विचारों का स्वागत करना चाहिए।

# पवित्र आचरण, पवित्र व्यवहार, सभी का शुभ चिन्तन साधु का लक्षण है

**सर्वेश्वरी की प्रतीक माताओं एवं शिवों के प्रतीक मेरे बन्धुओं!**

आज इस पवित्र पर्व पर आप आये हुए हैं। हमारे प्रियजन, हमारे अतिथियों के प्रवचन जो सुने वह सभी संत-महात्माओं और फकीरों की वाणियों से सम्बन्धित था और आप सोच सकते हैं कि जो इतने व्यस्त रहने वाले व्यक्ति कार्यक्रमों में, इन संत-महात्माओं और फकीरों के वाणियों के प्रति इतना याददाश्त बनाये हुए हैं।

यहाँ आपने देखा कि इस देश के बड़े बड़े राजा और महराजाओं, नेताओं की गुण गाथाओं को नहीं गाया गया। साधु और फकीरों के गुण गाथाओं को गाया गया। जो आज भी भारतीय जनता के हृदय में जन जन में साधु महात्माओं को जगह मिला हुआ है, श्रद्धा मिला हुआ है वह इस देश के नेताओं को, राजा-महाराजाओं को भी नहीं मिलने वाला है। सन्त और महात्मा का कोई अलग से विशेषता नहीं होता है। इन्हीं लोगों में जो पवित्र आचरण का हो जाता है, जिनका पवित्र व्यवहार हो जाता है जिनके प्रत्येक मनुष्यों के प्रति शुभचिन्तन होने लगता है, वही संत और महात्मा हो जाता है,और वह अपने भारतीय जो नागरिक हैं, ग्रामीण हैं, उनके अमोघ विश्वास का भाजन हो जाता है। वह विश्वास बड़े बूढ़े लोग अपना भी देते हैं और अपने छोटे बच्चों से भी प्रेरणा करते हैं कि वह संत, महात्माओं और फकीरों में विश्वास करें। उनका गुण, उनका व्यवहार, आचरण अपने आचरण में उतारो जिससे तुम्हारे आचरण का जो स्वस्थ और सबल मार्ग है, उसे तू तय कर सके और अपने जीवन का जो एक पवित्र अनुभूति जिसे शान्ति कहिये और सभी तरह से पूर्ति कहिये वह प्राप्त होता है।

बहुत पवित्र, सुन्दर और व्यवहारिक रूप में आ सके, ये लोग सभी व्यवहारिक बातें कहें हैं। कोई दार्शनिक बातें नहीं कहा है। मैं आशा करता हूँ इसे आप आचरण, व्यवहार में उतारेंगे। अपने जीवन की जो कमी है, उसकी पूर्ति करेंगे, अपने आचरण में ले आ करके।

## उपासक एवं उपासना

पृष्ठ 2 का शेष

घटने दें। हम रोकते हैं तो न हम अपने अनुकूल हो सकेंगे न उस पर उपास्य के अनुकूल हो। हमारा जीवन चक्र बराबर चलता रहेगा। अपने जीवन चक्र को एक ऐसा मोड़ दे, जिससे एक व्यक्तित्व आवें, जिससे धैर्य के साथ काफी समन्वय हो। किसी तूफान, किसी भी परेशानी से अपने चित्त को उकताना नहीं चाहिए। इससे जीवन में कभी-कभी एक असंतोष हो जाता है। अपने आप ही एक बोझ हो जाता है। जैसे बहुत सी स्त्रियाँ स्वयं के बोझ हैं। उनके शरीर से कोई ध्यान, धारणा कुछ नहीं होता। बहुत से विचार, अनिष्ट की भावनायें अपने पर न लादते फिरे, यह शरीर, यह हाथ, यह पांव उसी इष्ट के लिये हैं, उनकी प्रेरणा से काम होगा। ऐसा जिसका बना है, वह अनुशासित रहता है, शाश्वत भी होता है इस भूमण्डल पर शासन करने का बहुत बड़ा अधिकारी भी होता है।

## गुरु एक स्टेशन के समान है; आप वहाँ से हर स्थान का टिकट ले सकते हैं

### समझने की बात एक मास्टर के साथ

**भूत कहे अवधूत कहे रजपूत कहे जोलहा कहे कोऊ,**
**काहू के बेटा बेटी न व्याहिब मांग के खाईब मसजिद में सोईब काहू के जात बिगाड़ब नाहीं।**

मास्टर! इस फकीर की बात याद आ गई जिसने कहा था कि जात पात धन धरम बड़ाई। हित मीत सदन समुदाई। सब तजि तब गुरु राम चरन मन लागी। इसका लेशमात्र भी अभिमान होगा तो चित्त गुरु राम में लय नहीं होगा और इस स्थिति में सब फीका होगा और अपना जीवन में इस फीकेपन का अनुभव व होने लगता है। चित्त का लय ईश्वर में अपने पूर्व कर्मों का दहन करता है। निर्बीज होकर जीव ईश्वर संज्ञा को प्राप्त होते हैं। दग्धबीज की तरह चित्त होने पर आप समझ लीजियेगा कि आप ईश्वर के गोद में है।

## विश्वास और आस्था रखें

अपने में पूर्णता के लिए विश्वास देना अति आवश्यक है। मित्र बन्धुओं बान्धव में विश्वास दें। ईश्वर प्राप्ति के लिए विश्वास ही प्रथम सीढ़ी है। विश्वास एक धर्म है। यह आनन्दमय जीवन की पूँजी है। समाज के हर क्षेत्र में आवश्यक है, विश्वास दें। साधु देवता पड़ोसी तथा नौकरी में विश्वास दें और लें। इससे अपने साथियों में एक उत्तम स्थिति आयेगी। अपने साथियों में अगर विश्वास देंगे तो आपको आनन्द प्राप्त होगा। अन्त में आपको आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने कार्यों में उन्नति करें। भगवान आपको सही मार्ग दिखाये।

किसी कार्य को अच्छे ढंग से चलाने के लिए चार-पाँच व्यक्ति ही काफी हैं। आध्यात्मिक परिषद के द्वारा ज्ञान-प्राप्ति से एक विशाल ज्ञान ही एकत्रित हो सकती है। चिन्तन के लिए विशाल वृक्ष जैसा ज्ञान प्राप्त होता है, जिसके छाये में हजारों लोग शान्ति का अनुभव प्राप्त करते हैं।

किसी चीज में आस्था की आवश्यकता होती है। आस्था को स्थायी रूप देने से स्थायित्व हो सकती है। हमारे देश में आध्यात्मिक स्वतंत्रा प्राप्त है, जिससे सभी लोग अपने में आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। अपने गोष्ठियों में विचारों के संग्रहण से बहुत ही अच्छा गुण आता है। आप अपने अन्दर के देवता को जागृत करें उसी से आपको सच्चा आनन्द प्राप्त होगा।

सबसे बड़ी चीज है पथ। लाख अनुग्रह, प्रयत्न कोई नहीं काम आयेगा। अगर पथ ठीक न हो।

सबसे बड़ा रोग मानसिक रोग होता है। ज्ञान, भक्ति, पूजा सब रोग है। सब बीमारी है। नाव मिला है पार करने के लिए। यह सब कुछ नहीं भायेगा। ये तीन, भूख, प्यास, मैथुन सभी रोग है। वह अभिन्न यंत्र से शून्य है। ठहरता कौन है जो असली होगा। राम लक्ष्मण असली थे माया जो रावण का था, सैकड़ों रावण बना देता था (लेकिन वह नहीं रहा) सहस्रों नकली बन जाय जहाँ राम वाली तीर उठेगी तो भाग (सैकड़ों रावण) जायेंगे।

हम वास्तव में क्या हैं। हम को क्या करना है? माया से बना जो जाल है सब खत्म हो जायेगा। भेष से भीख मिलता है मगर भेष भीख तक ही (सीमित) रखें। कोट पैन्ट पहन कर जाने से भीख नहीं मिलेगा किन्तु साधु भेष में जाने से भीख मिल जायेगा। भेष से ठगे नहीं। यह सामाजिक अन्याय होगा। ईश्वर के प्रति अन्याय होगा।

अपना भगवान, ईश्वर उसको पर्दा में न रखें। बुरा काम जो करता है। उसकी दिशायें गवाही देगी जिसके छिपाने से पर्दाफाश होगा। किसी चीज से घृणा नहीं करना चाहिए। राम कृष्ण परमहंस ने देवी को प्रसन्न रखने के लिए कोई घृणा नहीं किये। कालीदास ने महाराज का प्रवाह नहीं किया। जब देवता, इष्ट प्रसन्न होगा तो बुरा भी भला होगा। अपना इष्ट देवता खुश नहीं तो कुछ नहीं। इष्ट लक्ष्य को कहते हैं। इस पृथ्वी पर अमन चैन से रहे, हम अपने इष्ट देवता की प्रसन्नता चाहते हैं। वशिष्ट, तुलसी आज भी अपनी पुस्तकों में जीवित हैं। क्योंकि बुरा का बुरा, भला का भला कर्म लगेगा। कर्म के अनुसार ही हमें पुन: जन्म लेना होता है।

हे देवी पुन: अब हम गर्भ में न हो। जन्म मृत्यु में दु:ख होता है। भोगों को भोगने के लिये पुन: जन्म होता है। इसीलिए वाम मार्ग का पूजा करते हैं। भूने बीज के सदृश्य बन जाओ। भूना बीज पुन: बोया नहीं जाता। वासना रह जाता है तो पुन: जन्म होता है। देवी से अनुग्रह है कि हमें प्रेरणा दें।

## आश्रम वही हो सकता है जहाँ कि वर्ण व्यवस्था नहीं होता

***धर्मबंधुओं,***

**पिछले अंक का शेष**

यदि उसमें आपका विश्वास है, निष्ठा है फिर मनुष्य की क्या आशा करते हैं? ये मनुष्य न कुछ बिगाड़ सकते हैं न कुछ बना सकते हैं। अभी आप बंगला देश का देख लीजिये। लाखों लाखों व्यक्ति गये उसको मारने के लिये गये पर वह व्यक्ति बच भी गया और राष्ट्रपति भी हो गया। जाको राखे सांइया मार सके ना कोई। तो आप सोच लीजिये आपका विश्वास, आपका निश्चय, आपका अनुष्ठान, मुजीब से भी ज्यादा बढ़ कर हो सकता है।

विश्वास, निष्ठा देखिये। एक व्यक्ति था प्रह्लाद, इसी हिन्दुस्तान का। पूरे दुनिया का शासक था उसका पिता हिरण्याक्ष। इनसे भी ज्यादा बड़ा भारी राष्ट्र का था। इनसे तो कुछ लोग मिले भी थे जैसे हिन्दुस्तान, हमलोग मिले, इधर के मिले, उधर के मिले। यह अकेला लड़ता था। शिक्षा में भी प्रवीण नहीं था। उसका कोई साथी नहीं था। मास्टर, प्रोफेसर भी अब उसका साथ नहीं दे रहे थे। सब लोग उसका दुराव कर रहे थे। घर, परिवार, कुटुम्ब भी दुराव कर दिये। हटावो इसको, शक्ति के साथ, बादशाह के साथ विरोध कर रहा है। इसका कौन साथ देगा? कौन सूली पर चढ़ेगा? मगर उसके दृढ़निश्चय, दृढ़ प्रतिज्ञा और ईश्वर में सच्चा विश्वास, उस परमात्मा में, दैव में सच्ची उसकी निष्ठा ने पूरे हिरण्याक्ष का तख्ता पलट दिया। पलट के उसका शासक बन गया, उस प्रह्लाद ने। कोई सपना में भी नहीं सोच सकता था कि ऐसा भी होगा।

नहीं! आपमें बड़ा ही बल है। बड़ा ही साहब है। आप बहुत बड़े वस्तु हैं। आप कभी नहीं सोचते आप चिंगारी है और इतने बड़े प्रज्ज्वलित चिंगारी हैं कि आप बहुत भस्म कर सकते हैं। फिर आप आश्रमों में रह रहे हैं और वर्ण की चिन्ता करते हैं।

आज जितने भी बड़े नेता देख रहे हैं, वर्ण की चिन्ता को भुलवा कर, वर्ण को पीछे ढकेल कर, तब ये लोग इतनी अवस्था में पहुँच सके हैं। आप भी पहुँच सकते हैं। आप भी कर सकते हैं और इस बात को हमारे निश्चय रखियेगा, आप हेय दृष्टि से अपने ग्रामीण, उस कास्ट वालों को नहीं देखे रहते तो इस तरह की परिस्थिति हमलोगों को कमजोर नहीं कर सकती। सब हमारे आदरणीय होते और हम सबके आदर के पात्र होते अच्छा रहा यह विषय आश्रम और वर्णशाला जिससे यह हमने कह दिया और कभी-कभी आपको कहूँगा।

**अघोर सूत्र**

☞ **सामान तो एकत्र किया सौ दिन का किन्तु जिन्दगी है दो दिन की। बिस्तर से उठ नहीं पाते, संसार से उठ जाते हैं।**

**अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी**